REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2024

रजनी अनुरागी के काव्य संग्रह ''बिना किसी भूमिका के'' काव्य संग्रह में पुरूषसत्ताक व्यवस्था में अपनी भूमिका तलाशती स्त्री

डॉ. अरजण वी. नंदाणीया
एम.ए., पीएच.डी.
श्री वी. एम. महेता म्युनि. आर्टस एवं कॉमर्स कॉलेज जामनगर (गुजरात)

पुरूषसत्ताक समाज व्यवस्था में स्त्री समाज की भूमि और भूमिका की तलाश करती समकालीन महिला साहित्यकारों में रजनी अनुरागी एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। स्त्री विमर्श तथा स्त्री मुक्ति से जुड़ा रजनी जी का संपूण काव्य स्त्रियों के दुःख, दर्द, पीडा, शोषण दलन, घुटन, अपमान को पूरी ताकत के साथ बहुत गंभीरता से अभिव्यक्त करता है। अपने पहले काव्य संग्रह 'बिना किसी भूमिका के' से हिंदी साहित्य जगत में चर्चा का विषय रही रजनी अनुरागी जी दिल्ली के जानकीदेवी मेमोरियल महाविद्यालय मे प्राध्यापिका के रुप में कार्यरत हैं। इनकी हर कविता में गांव से लेकर महानगर तक का स्त्री वर्ग अपने दुःख, दर्द, व्यथा, यातना के साथ अपने आत्मसम्मान की लढाई लढता नजर आता है। रजनी जी यह भलीभांति जानतीं है कि पुरूष वर्चस्ववादी समाज व्यवस्था ने प्राचीनकाल से लेकर आज तक स्त्री की कोई भी ठोस प्रतिमा एवं भूमिका तैयार नहीं होने दी हैं। इसलिए वह अब बिना किसी भूमिका के ही इस अन्यायकारी व्यवस्था से संघर्ष का लोहा लेकर आपनी एक ठोस भूमिका बनाकर उसे प्रचलित समाज व्यवस्था में प्रस्थापित करने के लिए आमदा है।।

स्त्री वर्ग के हर दुःख, दर्द से भरे भावविश्व की परत–दर–परत खोलने वाली रजनी जी की हर कविता अपने तमाम परिप्रेक्ष्यों और भावभूतियों के साथ स्त्री केंद्रित होते हुए भी वह खुद के स्व तक सीमित न होकर उसका फलक संपूण स्त्री समाज तक फैला हुआ हैं। व्यापक मानवीय सरोकार रजनी के कविताओं का केंद्रीय स्वर रहा है। स्त्री और पुरुष दोनों मानव समाज के अभिन्न अंग है। और दोनों ने ही जिस परिश्रम से मानव समाज को आज प्रगति के शिखर पर खडा किया है, वह अकेले पुरुषों के बस कि बात नहीं थी। इस सच्चाई को पकड़ते हुये कवयित्री मानव सभ्यता के इतिहास में जब अपने पदचिह्न देखने लगतीं हैं, तो वहां पर उसे अपने पदचिह्न तो छोड़ ही दो अपना कार्इ नामोनिशान तक दिखाई नहीं देता। कवयित्री जब भी इस इतिहास में जाकर आपनी भूमिका तलाशती हैं, तो उसमें उसे हर पन्ने पर केवल और केवल पुरुषों की ही जयजयकार दिखाई देती हैं, तब वह व्यथित होकर कहती है। – "इतिहास की किताबें पढते हुए राजा–रानियों के किस्से में कहीं नहीं मिली/इतिहास के पन्नों से बेदखल रही/स्त्री का कहीं कार्इ इतिहास नही (किताब) ।

मानव सभ्यता के विकास के इतिहास में या संस्कृति, धर्म, राजनीति और समाज के संचालन में आदि से लेकर आज तक स्त्री पुरुषों के साथ बराबर के परिश्रम करते और सहते आयी हैं। उसके इस योगदान के संदर्भ में इतिहास में कहीं पर भी दो शब्दों का उल्लेख न करना। इसे वह पुरुषसत्तात्मक व्यवस्था का षडयत्रं मानती हैं। इस व्यवस्था ने किस प्रकार बडी चालाकी से स्त्री को उसके ऐतिहासिक योगदान से खारिज कर चूल्हे–चौके के पिजड़े में कैद कर दिया हैं। इसे व्यक्त करते हूए अनूरागी जी कहती हैं– मैं स्त्री को खोजती रही

तलाशती रही/उम्र के एक पाडवा पर आकर पत्ता चला/स्त्री गुमा दी गई थी चौके – बरतनों में/ और मैं खोजे रही थीं उसे किताबों में।

इस प्रकार इतिहास में स्त्री के साथ जो छल–कपट हुआ वहीं भविष्य में न हो इसलिए रजनी जी वर्तमान में स्त्री समाज को जागृत ही नहीं करती तो उन्है। पढ–लिखकर आत्मनिर्भर बनाने की प्रबल प्रेरणा देकर वर्तमान समय में अपनी एक ठोस भूमिका बनाने की बात पर भी जारे देती है। क्योंकि आनेवाले समय पर वह अपने पक्के निशान बना सके और चालक पुरूषसत्ताक व्यवस्था उसे नष्ट न कर सके। मैं चाहती हूं हर बच्ची के हाथ में किताब/जिसमें उसके स्वप्न जिंदा रहें/ उनकी उम्मीदें बरकरार रहै। /और किताबें भरी हो प्रेम के स्पदंनों से/ जहाँ वो बैठ सके सकुनसे/ खूद के साथ खुद के पास (किताब)

रजनी अनुरागी जी एक स्त्री होने के कारण पुरुषों का विरोध नहीं करती तो पुरुषवादी व्यवस्था ने जिस तरिके से संपूर्ण स्त्री समाज के अस्तित्व, अस्मिता और स्वतत्रंता पर कब्जा कर उसे अपना गुलाम बनाया हैं, उससें मुक्ति की बात संयत स्वर में करती हैं। वह इस निर्मम व्यवस्था को निडरता से अपनी हिस्सेदारी भी माँगते हुये क्यों इस कविता में कहतीं हैं। तमु हो मेरे मैं हुँ तुम्हारी/फिर भी नहीं कोई हिस्सेदारी/जीवन अजस्र बहती धारा/जिसमें ना कुछ मेरा.... (क्या)

अपनी प्यार इस कविता में रजनी जी पुरुषों को अगाह करती है। कि तुम जिस के आधार पर बडी–बडी सफलता प्राप्त करते हौ, उसका संभल आधार स्त्री का प्यार मात्र है और जब तुम उसके प्यार को ही नजरअंदाज करोगे तो इस बियावान में अकेले हो जाआगे और तुम्हारी कोइे भी सफलता तुम्हारे लिए किसी काम कि नहीं रहेगी। इसलिए हमारे प्यार को समझने की कोशिश करो। हमारा प्यार हमारी कमजोरी न होकर तुम्हारे जीवन की सार्थकता का प्रतीक हैं। प्यार है मेरा तुमसे/ इसे कमजोरी न समझ लेना/किसी आतंक में यह पल नहीं सकता/अकेले हो जाआगे तुम /क्योंकि मेरा प्यार तुम्हारे लिए/सबसे बड़ा सहारा हैं। (प्यार)

पुरुषवादी समाज व्यवस्था ने स्त्री जीवन को अनेक विडम्बना का शिकार बनाया है। यह व्यवस्था उसे उसके देह से अलग कर देखना ही नहीं चाहती। सदियों से इस व्यवस्था ने उसे मात्र आपने उपभोग का साधन ही माना है किंतु आज की स्त्री अपनी परंपरागत इस छबि को तोड कर खुद की एक नयी छबि बनाने का जी तोडकर प्रयास कर रही हैं। वह आयें दिन अपनी इस परंपरागत जर्जर हालत से उबरने के लिए एक नये सवेर का इंतजार कर रही है। कि उसे भी इस समाज व्यवस्था में बराबर का दर्जा मिलेगा, उसके ऐतिहासिक योगदान को स्वीकार कर पुरूष उसे उसकी हिस्सेदारी सम्मान से देगा, उसके साथ समतामूलक व्यवहार करेगा, उसके अभिव्यक्ति स्वतंत्रता का स्वागत कर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक जीवन में उसे बराबर का स्थान मिलेगा जिसके बल पर वह अपनी पुरानी छबि को तोडकर समाज में एक नई छबि के साथ जीवन जी सकेगी किंतु उसकी इन तमाम इच्छा आकांक्षा तथा साचे को सत्य में परिवर्तित होने से पहले ही पुरूषसत्ताक व्यवस्था निर्ममता पूर्वक गर्भपात करता हैं। इसे रजनी जी ने विडम्बना कविता में सटीक ढंग से उजागर किया हैं। बदलती हुँ करवटें रात भर/करती हूं इंतजार/पर भारे कभी होती ही नही/ प्रसव की सी वेदना झेलती उठतीं हुँ /पर रचा जाता कुछ भी नही/ रोज ही हो जाता है। गर्भपात/मेरी आशाओं का।(विडम्बना)

इस प्रकार रजनी जी स्त्री जीवन की सच्चाई व्यक्त करते हुए, इस ओर संकेत करती है। कि जब भी स्त्री अपनी वर्तमान जर्जर दशा को बदलने का प्रयास करती है। तब–तब यह व्यवस्था उसके इस प्रयासों का ही गर्भपात कर उसे मृत्यु यातना ही देता आया है और दे रहा है। आज हमारा समाज भले ही अपनी आधुनिक सोच–विचार एवं सभ्यता का ढोल पीट रहा हो किंतु इस आधुनिकता से भरे फेशनपरोस्त समाज व्यवस्था में स्त्रियों का शोषण थमने का नाम नहीं ले रहा हैं। आज आये दिन स्त्री पर अत्याचार बढ रहे हैं। उसकी हत्या हो रही हैं, कहीं देह ज के नाम पर तो कहीं वासनात्मक विचारों से उसके शरीर को नोच कर उसे प्रताडित और पीडित किया जा रहा हैं। इस नये समाज व्यवस्था की बागडोर आपने हाथ में लेकर स्त्री का शोषण करने के लिए नये–नये हथकडें वर्तमान पुरुषवादी व्यवस्था अपना रही हैं। इसकी पोल खोलते हुये कवयित्री नया क्या लिखुँ इस कविता में कहती हैं।

स्त्री जीवन का सफर आरंभ से लेकर आज तक कितना दर्दनाक, हिंसाग्रस्त, उपेक्षित और अपमानित रहा हैं। इसका वास्तविक चित्रांकन रजनी जी ने अपनी कविता में बंबाकी से किया हैं। उनकी औरत कविता स्त्री अपने जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक कितनी–कितनी यातनाओं और वर्जनाओं का सामना करती हैं, इसका ज्वलंत दस्तावजे हैं। स्त्री उम्रभर अपने घर को बनानै, उसे सजाने–सवाँरने के लिए रात–दिन खपती है।

किंतु फिर भी उसका अपना कोइ घर नहीं होता। उसकी बेघर होने की व्यथा को व्यक्त करते हुए कवयित्री कहती हैं।

इस प्रकार अपने घर–परिवार के लिए आपना सर्वस्व न्योछावर करना स्त्री की नियति बन गया है किंतु उसी घर–परिवार वालों की कोइ जबावदेही उसके प्रति समाज में आज भी कहीं पर दिखाई नहीं देती। वह सबको संभालती–पाल–पोस कर बडा करती हैं। घर–परिवार की कोइ कमजोरी कभी भी घर के बाहर जाने नहीं देती, हाडतोड मेहनत कर पूरे परिवार को एक रखती हैं। सबके दर्द की दवा बनती, सब के लिए वक्त–बेवक्त अलग–अलग किरदार निभाती हैं। इन सबके बदले में उसे क्या मिलता है। तो उसका अपना घर–परिवार में कोइ नहीं होता हैं। छोटीसी बात को लेकर उसे सडक पर खडा किया जाता हैं। उसके सम्मान पर ठोकरें मार–मार कर अपमानित किया जाता हैं। चरित्र पर उंगली उठाकर असाह्य पीडा दी जाती हैं।

जीवन के इस सफर में स्त्री अपने घर–परिवार का सच्चा हमसफर बनकर साथ देती है। किंतु विवशता कि बात यह हैं कि उसे अपना जीवन सफर अकेले–अकेले ही गुजारना पडता है। और उसके इस दर्द भरें सफर में केवल दो ही पाडाव आते हैं, एक पिता के घर से पति के घर और पति के घर से श्मशानघाट तक। यही हर भारतीय स्त्री जीवन की दर्दभरी सच्चाई हैं। जिसें रजनी जी ने बहतु ही सच्चै, सहज, सरल शब्दों में अपनी कविता के द्वारा अभिव्यक्त किया हैं।

प्रस्तुत काव्य संग्रह स्त्री जीवन के दर्द का दहकता दस्तावेज हैं। स्त्री मुक्त होकर जी सकै, सोच सकै, विचरण कर सकें इसलिये पुरूषसत्ताक समाज व्यवस्था ने न पहले कभी किसी भूमिका का विकास होने दिया है। न वर्तमान समय में इस दिशा में कोइ पहल की जा रही है। बल्कि यह व्यवस्था हर समय में स्त्री का शोषण, दोहन, उत्पीडन कर उसे छल–कपट से धोखा ही देता आया है। और दे रहा है। ऐसी बेरहम व्यवस्था का शिकार बनी स्त्री के जीवन की त्रासदी को अपने कलम से वाणी देकर, उसकी आंतरात्मा की आवाज को बुलंद कर उसके जीवन को एक नई दिशा और गति देने का सार्थक प्रयास युवा कवयित्री रजनी जी बडी लगन और मेहनत से करती दिखाई दे रही हैं।

संदर्भ

1) बिना किसी भूमिका के (कविता संग्रह)–रजनी अनुरागी

डॉ. अरजण वी. नंदाणीया
एम.ए., पीएच.डी.
श्री वी. एम. महेता म्युनि. आर्टस एवं कॉमर्स कॉलेज जामनगर (गुजरात)